Rupali chaubey

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार..

Que 1 (A) रूसो (Rousseau)

- फ्रांसीसी क्रांति के समय एक महान दार्शनिक थे
- कृतित्व - 'सोशल कोन्ट्रैक्ट'
- इन्होंने फ्रांस की राजतंत्रात्मक व्यवस्था की बुराईयों को उजागर किया तथा लोगों की 'सामान्य इच्छा' पर आधारित राज्य के निर्माण की बात कही।

(B) पेरिस शांति सम्मेलन

आयोजन - पेरिस में 1919 में

संबंधित - प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात विश्व में शांति व सुरक्षा के लिए सम्मेलन आयोजित।

परिणाम - मित्र राष्ट्रों ने पराजित राष्ट्रों के साथ संधियां और जर्मनी के साथ वर्साय की संधि।

(C) आरण्यक

- यह ब्राह्मण ग्रन्थों का अंतिम भाग है
- इसके अंतर्गत दार्शनिक एवं रहस्यात्मक विषयों का वर्णन किया जाता है।
- चिन्तनशील लोगों को अधिक महत्व
- आरण्यक की संख्या 7 है- ऐतरेय, आरण्यक आदि।

(D) तुर्कान-ए-चिहालगानी

- यह दिल्ली सल्तनत के गुलाम वंश से संबंधित
- स्थापना - इल्तुतमिश
- उद्देश्य - चालीस गुलाम का समूह जिसे शासन संचालन व सुदृढ़ करने के लिए उच्च पदों पर आसीन किया।

समाप्त - बलबन

(E) देवबंद आंदोलन

- यह मुस्लिम धार्मिक आंदो. था।
- आंदो. की शुरुआत 1866 में मोहम्मद कासिम नानोतवी द्वारा की गई थी।
- उद्देश्य - कुरान व हदीस की शिक्षाओं का मुसलमानों के मध्य प्रचार-प्रसार करना।

(F) शहडोल संभाग के अंतर्गत आने वाले जिले

- शहडोल
- उमरिया
- अनूपपुर

KAUTILYA ACADEMY INDORE

(9) सुभद्रा कुमारी चौहान

यह एक कवियत्री व लेखिका है
- संबंध म.प्र. के खण्डवा से था
- जेलयोग आंदो. व झण्डा सत्याग्रह मे इन्होने सक्रिय भूमिका निभाई।
- रचनाएँ काव्य संग्रह – मुकुल, त्रिधारा
  कहानी – बिखरे मोती आदि।

(10) म.प्र. पर्यटन विकास निगम
- स्थापना – 1978
- उद्देश्य – म.प्र. के पर्यटन क्षेत्रो का विकास करना एवं पर्यटन गतिविधियों को प्रोत्साहित करना।

(11) टेनिस कोर्ट की शपथ
- 1789 फ्रांस की क्रांति के समय घटी घटना। इसके अंतर्गत स्टेट III (आमजन, व्यापारी, धार्मिक आदि सम्मिलित) ने टेनिस कोर्ट नामक स्थान पर शपथ ली की "हम कभी अलग नही होंगे जब तक संविधान नहीं बन जाता तब तक साथ रहेंगे"

KAUTILYA ACADEMY INDORE

(g) तालिकोटा का युद्ध

- कब हुआ - 23 जनवरी 1565
- कहां - तालिकोटा (कर्नाटक)
- किसके बीच - विजयनगर व दक्षिण राज्यों के संघ के बीच
- नेतृत्वकर्ता - रामराय (विजयनगर) व अली आदिल शाह (दक्षिण राज्यों के संघ)
- परिणाम - विजयनगर की हार

(h) रहनुमाई माजदायसन सभा

- स्थापना कब - 1851
- संस्थापक - दादाभाई नौरोजी
- उद्देश्य - पारसी समाज का पुनरुद्धार करना।

(i) विट्टि

KAUTILYA ACADEMY INDORE

संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

(M) सिंहदेव समिति
- म.प्र. जिला पुनर्गठन से संबंधित समिति।
- जून 1984
- 9 नये जिलों के निर्माण की सिफारिश।
जिसमें से उमरिया, हरदा, नीमच म.प्र. के अंतर्गत आते हैं।

(N) डबीं गंग कांड

(O) चरण पादुका नरसंहार
- 14 जनवरी 1931
- छतरपुर जिले में घटित घटना थी।
- इसमें स्वतंत्रता सेनानियों की शांतिपूर्ण बैठक पर पुलिस द्वारा अंधाधुंध गोली चलाई जिसमें कई लोगों की मृत्यु।
- जलियावाला बाग की संज्ञा दी गई।

Qu 8 (A) द्वितीय विश्व युद्ध के संभावित परिणाम लिखिये?

1939-1945 के बीच जर्मनी द्वारा पोलेण्ड पर आक्रमण से द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत हुई जिसने संपूर्ण विश्व को प्रभावित किया।

द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामों को देखे तो वह निम्न दिखाई देते है–

परिणाम

- → यूरोप का पतन => द्वितीय विश्व युद्ध के बाद राजनैतिक व आर्थिक क्षति से यूरोप का महत्व कम व अमेरिका नई शक्ति बनकर उभरा।
- → दो महाशक्तियों का उदय => वैश्विक परिपेक्ष्य में अमेरिका व रूस का महाशक्तियों के रूप में उदय हुआ।
- → शीतयुद्ध का आरंभ → अमेरिका (पूंजीपति) व सोवियत संघ (समाजवादी) के बीच आरंभ।
- → संयुक्त राष्ट्र संघ का उदय → सैनफ्रांसिस्को में विश्व में शांति स्थापित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना
- → उपनिवेशवाद का पतन
- → गुटनिरपेक्ष आंदोलन का उदय आदि।

इस तरह द्वितीय विश्व युद्ध ने संपूर्ण विश्व की दशा व दिशा बदल दी इस युद्ध के बाद शांति, व सुरक्षा व निःशस्त्रीकरण बल दिया जाने लगा ताकि मानवता की रक्षा की जा सके।

KAUTILYA ACADEMY
INDORE

सख्या (Mains Answer Sheet) सफलता का प्रवेश द्वार

(प्रश्न) पुनर्जागरण इटली में ही क्यों हुआ बताइये?

14वी-16वी शताब्दी के बीच इटली से पुनर्जागरण की शुरूआत मानी जाती है जिसका अर्थ है पुरातन व्यवस्था की परिवर्तन के साथ फिर से स्थापित करना जहाँ तार्किकता व बौद्धिकता के साथ मानवता का महत्व हो।

पुनर्जागरण का इटली में होने के पीछे निम्न तर्क नजर आते है -

भौगोलिक स्थिति => भूमध्यसागर के मध्य स्थित होने के कारण भौतिक सम्पन्नता व सांस्कृतिक उन्नति हुई

नगरों की स्थापना => व्यापारिक गतिविधियों से वेनिस, मिलान, फ्लोरेंस आदि नगरों का निर्माण यहाँ संग्रहालयों, पुस्तकालयों आदि की स्थापना

मध्यमवर्ग का उदय => व्यापारिक मध्यम वर्ग के उदय ने साहित्यकारो, कलाकारो जैसे पेट्रार्क, दांते आदि का उदय जो पुनर्जागरण के प्रचारक बने

राजनैतिक व्यवस्था => सामंती व्यवस्था के स्थान पर उदारवादी व स्वतंत्र विचारधारा।

कुस्तुनतुनिया का पतन => तुर्की के आक्रमण से यहाँ के विद्वानो, कलाकारो, इटली के नगरो में संपर्क।

उपरोक्त कारकों ने इटली में पुनर्जागरण को गति प्रदान की जो आगे चलकर यूरोप व पूरे विश्व में इसका प्रभाव स्थापित हुआ।

प्रश्न संख्या | मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet) | कौटिल्य एकेडमी सफलता का प्रवेश द्वार...

Q. 2(c) गुप्तकाल में हुए सामाजिक परिवर्तनों का उल्लेख करो?

A. तीसरी सदी में श्रीगुप्त द्वारा गुप्त साम्राज्य की नींव रखी गई इसकी जानकारी के स्रोत के रूप साहित्यिक स्रोत रघुवंशम, पुरातात्विक स्रोत ऐरण, हरिषेण प्रयाग प्रशस्ति लेख आदि हैं।

गुप्तकाल में हुए सामाजिक परिवर्तनों को निम्न रूप से देख सकते हैं -

सामाजिक परिवर्तन
- वर्णव्यवस्था
- स्त्रियों की स्थिति
- दासों की स्थिति
- अस्पृश्यता

वर्णव्यवस्था
=> समाज चार वर्णों में विभाजित
=> जन्म के आधार पर वर्ण निर्धारित
=> ब्राह्मणों का स्थान उच्च
=> इस काल ब्राह्मण कृषि कार्य करने लगे
=> याज्ञवल्क्य स्मृति शूद्रों को व्यापारी, कारीगर, कृषक होने की अनुमति।

स्त्रियों की स्थिति => दयनीय थी।
- ऐरण अभिलेख में सतीप्रथा के साक्ष्य।
- स्त्रियों को सम्पत्ति संबंधि

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

- अधिकार दिये गये
- नारद स्मृति विधवा विवाह का समर्थन मिलता है।

दासों की स्थिति ⇒ नारद स्मृति में 15 प्रकार के दासों का उल्लेख मिलता है।
- दासो की मुक्ति की व्यवस्था की गई।

अस्पृश्यता ⇒ फाह्यान ने भी अस्पृश्यता का उल्लेख किया है जो शूद्रो से अलग वर्ग था इन्हे अंत्यज व चाण्डाल कहा जाता था।

इस तरह हम गुप्तकाल में समयानुकूल भौतिक प्रगति के कारणों से उक्त परिवर्तन देखते है किंतु कोई क्रांतिकारी परिवर्तन नहीं दिखाई देते है आम जन की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं।

प्रश्न संख्या | मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet) | कौटिल्य एकेडमी

Q2 (D) शाहजहाँ कालीन स्थापत्य का वर्णन कीजिये?

मुगलकालीन शासक जो जहाँगीर के पश्चात 16वीं सदी में सिंहासन पर बैठा इसके काल को स्थापत्य का स्वर्णकाल कहा जाता था।

शाहजहाँ कालीन स्थापत्य कला को इस प्रकार वर्णित कर सकते है—

शाहजहाँकालीन स्थापत्य कला →

- विषयवस्तु – किलो, भवनो, मस्जिदो आदि का निर्माण
  - लाल किला
  - ताजमहल
  - जामा मस्जिद आदि
- सामग्री ⇒ लाल बलुआ पत्थर व संगमरमर का प्रयोग किया।
- विशेषता ⇒ भव्यता, विशालता व अलंकृत भवनों का निर्माण किया।
  - पित्राडुरा पद्धति का उपयोग
  - = महराबों, गुम्बदों व्याटलाग पद्धति का प्रयोग किया।

उपरोक्त के आधार पर कहा जा सकता है शाहजहां की स्थापत्य में रुचि थी जिसके आधार पर बड़े पैमाने निर्माणकार्य करवाए जो वर्तमान में भी जीवंतता लिये हुये हैं।

Q2 (E) बंग-भंग आंदोलन पर निबंध लिखे?

16 अक्टूबर 1905 को लार्ड कर्जन द्वारा बंगाल विभाजन के लागू करने के साथ ही राष्ट्रवादियों द्वारा बंग-भंग आंदोलन की शुरुआत की थी।

बंग-भंग आंदोलन को इस प्रकार देख सकते है-

बंग-भंग आंदोलन
- कारण
- भारतीयों की प्रतिक्रिया
- विस्तार
- कार्यप्रणाली
- कांग्रेस की भूमिका
- प्रभाव

कारण ⇒ कर्जन का मत प्रशासन का संचालन सुचारू संचालन के लिए बंगाल का विभाजन।

⇒ भारतीयों आधार धर्म के आधार पर विभाजन राष्ट्रवादी गतिविधि को कुचलना।

भारतीयों की प्रतिक्रिया ⇒ स्वदेशी व बहिष्कार आंदोलन।

कार्यप्रणाली ⇒ विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार,
- जनसभाए व प्रदर्शन
- स्वदेशी व राष्ट्रीय शिक्षा का प्रसार
- आत्मविश्वास व आत्म शक्ति विकास पर बल आदि।

विस्तार - पंजाब (लाला लाजपतराय), महाराष्ट्र (बालगंगाधर तिलक), दिल्ली (सैय्यद हैदर रजा)

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

कांग्रेस की भूमिका => बंगाल विभाजन की आलोचना
- स्वदेशी व बहिष्कार आंदो. का समर्थन

प्रभाव => स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग में वृद्धि।
- भारतीय कला संस्कृति में वृद्धि, 'आमार-सोनार बंगला'
- राष्ट्रीय चेतना का प्रसार आदि।

इस तरह बंग-भंग आंदो० असहाय भारतीयों ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध तीव्र प्रतिक्रिया कि जो राष्ट्रीय आंदो० की दिशा में गति प्रदान करता है।

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न संख्या: Q2 (?)

म.प्र. के झण्डा सत्याग्रह पर जानकारी प्रस्तुत करे?

भारत के स्वतंत्रता संग्राम से म.प्र. भी अछूता नही रहा प्रदेश ने भी इस संघर्ष में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

म.प्र. स्वतंत्रता संघर्ष मे झण्डा सत्याग्रह का विशेष उल्लेख है जिसे निम्न बिंदुओं के आधार पर समझते है-

झण्डा सत्याग्रह

- कब
- कहाँ
- कारण
- पश्चात की प्रतिक्रिया

कब - 1923 में जबलपुर से झण्डा
कहाँ सत्याग्रह की शुरूआत हुई

कारण ⇒ असहयोग आंदो. की तैयारी के सिलसिले में पहुंचे कांग्रेसियों का स्वागत करने के लिए जबलपुर नगरपालिका भवन पर तिरंगा फहराया गया।

⇒ पुलिस कमिश्नर द्वारा उतारकर तिरंगे को कुचला।

=> इसी व्यवस्था के विरोध में सुभद्रा कुमारी चौहान, लक्ष्मणसिंह, सुन्दर लाल आदि द्वारा जुलूस निकाला।

- कांग्रेस ने इसका महत्व समझकर झण्डा सत्याग्रह की शुरूआत की।

नेतृत्व => देवदास गांधी, राजगोपालाचार्य, राजेन्द्र प्रसाद द्वारा।

परिणाम => सुन्दरलाल को 6 माह जेल।

इस तरह म.प्र. में झण्डा सत्याग्रह के महत्व को समझा जाता है जिसने भारत में एक सत्याग्रह की शुरूआत कर दी थी।

(Mains Answer Sheet)

Q.4 (a) चन्द्रगुप्त मौर्य की उपलब्धियों की जानकारी दीजिये?

चंद्रगुप्त मौर्य, धनानंद को पराजित कर 322 ई.पू. में मगध के सिंहासन पर बैठा व मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।

चंद्रगुप्त मौर्य की उपलब्धियों को जानने के स्रोत कौटिल्य अर्थशास्त्र, इंडिका, पुराण आदि से निम्न जानकारी प्राप्त होती है-

चंद्रगुप्त मौर्य की उपलब्धियां

→ सैन्य नायकत्व ⇒ नंद वंश का अंत किया
- सेल्यूकस निकेटर को हराया
- पश्चिमोत्तर भारत हिन्द-यूनानी शासकों से मुक्त

→ साम्राज्य विस्तार ⇒ काबुल - बंगाल, कश्मीर - मैसूर

→ शासन प्रबंधक ⇒ केंद्रीय, प्रांतीय, स्थानीय शासन प्रशासन-तंत्र पर आधारित था।

→ निर्माणकर्ता ⇒ सुदर्शन झील का निर्माण
- राजप्रासाद का निर्माण आदि।

→ धर्म - सहिष्णु शासक
- भद्रबाहु से जैन धर्म की दीक्षा

इस तरह चन्द्रगुप्त मौर्य ने मौर्य साम्राज्य की नींव रखी व एक विशाल साम्राज्य की स्थापना जिसे आगे अशोक द्वारा विस्तारित किया गया।

KAUTILYA ACADEMY INDORE

प्रश्न संख्या | मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet)

Q2 (b) असहयोग आंदो० का महत्व लिखो?

1920 में गांधी जी के नेतृत्व में असहयोग आंदो० की शुरुआत की गई जिसने ब्रिटिश सरकार की जड़े कमजोर की।

असहयोग आंदो० के महत्व को देखे तो तो निम्न महत्व नजर आते है—

- देश में राजनैतिक चेतना का प्रचार व प्रसार किया।
- संपूर्ण देश के एकता के सूत्र में बांधने का प्रयास किया।
- इस आंदो० से देश के लोगो मे राष्ट्र भक्ति की भावना का विकास हुआ।
- इस आंदो० ने अहिंसा के महत्व को और अधिक बढ़ाया।
- अंग्रेजो के दंभ को चोट पहुँची।
- स्वदेशी वस्तुओं के प्रति प्रेम व स्वाभिमान की भावना का संचार हुआ।
- अधिक से अधिक लोगो राष्ट्रीय आंदो० में भाग लेने को प्रेरित किया। आदि।

अतः यह आंदो० तात्कालिक रूप से असफल दिखाई देता है किंतु इसको दीर्घकालिक के रूप में स्वतंत्रता के बीज बोए जिससे आगे चलकर भारत छोड़ो आंदो० को परिणाम तक पहुचाया जा सका।

(Mains Answer Sheet)

संख्या

2 (I) म.प्र. में स्थित जैन पवित्र स्थलों की जानकारी दें?

म.प्र. सांस्कृतिक विविधता लिये हुये प्रदेश है जहाँ हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन आदि धर्मों के लोग व धार्मिक स्थल मौजूद हैं

म.प्र. में जैन पर्यटन स्थलों को इस प्रकार से देख सकते हैं –

पावागिरी => खरगोन जिले में स्थित
↳ 33 जैन मंदिर स्थित हैं

कुंथगिरी => देवास के सोनकच्छ में स्थित जैन तीर्थस्थल है

मुक्तागिरी => बैतूल जिले में स्थित है यहाँ जैनों के 52 मंदिर हैं
- पहाड़ों को काटकर बनाये गये हैं

सोनागिरी => दतिया जिले में सोनागिरी में प्रसिद्ध जैन तीर्थ स्थल है

बड़वानी => 72 फीट ऊँची बाहुबली की मूर्ति खरगोन में स्थापित है

गोम्मटगिरी => इंदौर जिले में स्थित आदिनाथ, महावीर स्वामी, पार्श्वनाथ आदि के मंदिर स्थापित हैं

प्र 2 (J) म.प्र. की जनजातीय कला पर प्रकाश डालिये?

भारत के म.प्र. में सर्वाधिक जनजातीय संख्या व प्रकार के लोग रहते है जिनकी अपनी एक कला है जो जनजातीय समूह को अपनी विशेष पहचान प्रदान करती है।

म.प्र. की जनजातीय कला पर दृष्टि डाले तो उसमें विविधता नजर आती है-

जनजातीय कला

- शिल्पकला
  - => मिट्टी शिल्प (झाबुआ)
  - => गुड़िया शिल्प जो कपड़े व धागों की बनाई जाती झाबुआ प्रसिद्ध
  - => छीपा शिल्प
  - => बाघ प्रिंट
  - - प्रस्तर शिल्प आदि
- => चित्रकला =>
  - निमाड़ - नागचित्र, थापा, फूली आदि
  - मालवा - माँडना, रंगोली आदि
  - बुंदेली - चौक पौरता आदि
- नाट्यकला -
  - मालवा मे - माच
  - बुंदेलखंड - स्वांग
  - निमाड़ - गम्मत आदि
- नृत्यकला - गौर, करमा, भगोरिया आदि

इस तरह म.प्र. में अनेक जनजातीय कलाएं प्रसिद्ध है जो जनजातीय संस्कृति को व्यक्त करती है आवश्यकता है इनके संरक्षण व विकास की ताकि इन्हें जीवित रखा जा सके।

KAUTILYA ACADEMY INDORE

प्रश्न संख्या

(Mains Answer Sheet)

3(a)

औद्योगिक क्रांति क्या है? इसके प्रभावों का वर्णन कीजिये?

18वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इंग्लैण्ड से औद्योगिक क्रांति की शुरुआत मानी जाती है क्रांति का तात्पर्य किसी व्यवस्था में आमूलचूल, त्वरित व व्यापक परिवर्तन होता है, औद्योगिक क्रांति में जहाँ हस्तशिल्प के स्थान पर बड़ी-बड़ी मशीनों व कारखानों में उत्पादन, लोहे व कोयले का उपयोग, ऊर्जा के क्षेत्र में कोयले, पेट्रोलियम आदि का उपयोग, पूँजी संचय वाष्प चलित इंजन आदि के प्रयोग से किया जाता है जिससे जहाँ वस्तुओं में अत्यधिक उत्पादन संभव हो सका।

औद्योगिक क्रांति के परिणामों के बारे में विचार करें तो यह निम्न निकलकर सामने आते हैं जैसे—

प्रभाव

- आर्थिक क्षेत्र पर प्रभाव
- सामाजिक क्षेत्र पर प्रभाव
- राजनैतिक प्रभाव
- वैचारिक प्रभाव

KAUTILYA ACADEMY INDORE

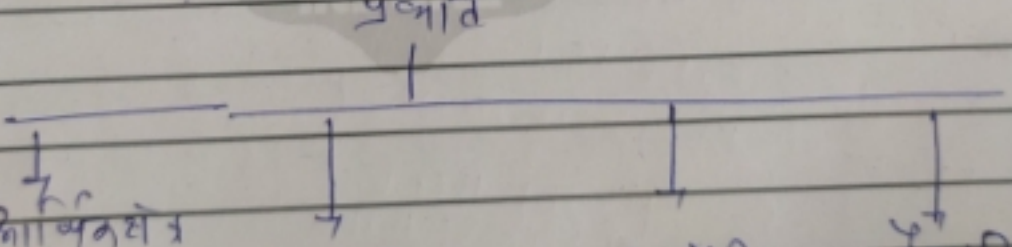

(1) आर्थिक प्रभाव => उत्पादन में वृद्धि => कारखानों व मशीनीकरण के कारण वस्तुओं के उत्पादन में असाधारण वृद्धि हुई।

शहरीकरण => गांवों में कुटीर उद्योगों के विनाश से लोगों का रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन हुआ।

आर्थिक असंतुलन => औद्योगिक राष्ट्र द्वारा अविकसित राष्ट्रों के शोषण में वृद्धि से दोनों के बीच खाई को गहरा किया।

मुद्रा व बैंकिंग प्रणाली का विकास => बदलते आर्थिक परिवेश में बैंक के माध्यम से लेन-देन व कागजी मुद्रा का प्रचलन बढ़ा।

(2) सामाजिक प्रभाव => जनसंख्या में वृद्धि - कृषि में तकनीकी प्रयोग से खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि व यातायात के साधनों से पहुंच को सुनिश्चित कर जनसंख्या में वृद्धि की।

नये सामाजिक वर्गों का उदय - औद्योगिकीकरण से पूंजीपति वर्ग, श्रमिक वर्ग, मध्यम वर्ग का उदय हुआ जिससे समाज में असंतुलन पैदा हुआ।

मानवीय संबंधों में गिरावट => मानवीय आत्मीय संबंधों का स्थान

KAUTILYA ACADEMY INDORE

संख्या (Mains Answer Sheet) सफलता का प्रवेश द्वार..

औद्योगिक संबंधों ने भिन्न, मानव को मशीन मान लिया गया।

नैतिक मूल्यों का पतन => भौतिक प्रगति ने शराब व जुए की प्रवृत्ति को बढ़ाया।

राजनैतिक प्रभाव => प्रजातांत्रिक प्रणाली की मांग => औद्योगिक क्रांति प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली की मांग जो उदारता व स्वतंत्रता को बल देती व पूँजीपति वर्ग को पसंद करती थी।

श्रमिक आंदोलन => श्रमिकों ने अपने शोषण व स्थिति को सुधारने के लिये श्रमिक संगठनों की स्थापना व अपने अधिकारों की मांग के रूप में आंदोलन किये।

वैचारिक प्रभाव => मुक्त व्यापार की विचारधारा का प्रचार-प्रसार हुआ।
- समाजवादी विचारधारा का विकास।

इस तरह औद्योगिक क्रांति ने संपूर्ण विश्व पर प्रभाव डाला व विश्व को नवीन दिशा प्रदान कि जिसमें औद्योगिकीरण को प्रकृरता दी जाती है वर्तमान में भी यह प्रक्रिया सतत रूप से प्रचलित है किंतु अब औद्योगिक विकास के रूप में मानवीय हितों, पर्यावरणीय हितों को ध्यान में रखने की आवश्यकता तभी सतत व समावेशी विकास की अवधारणा को साकार किया जा सकता है।

Q3 (b) अकबर को राष्ट्रीय सम्राट कहा जाता है विश्लेषण कीजिए?

15-16 वी शताब्दी में हुमायु की मृत्यु के पश्चात 1556 मे मुगल साम्राज्य का शासक बना जिसने भारत के बड़े क्षेत्र पर शासन किया तथा शासन का संचालन की दूरदर्शिता कुटिलता व कूटनीति के साथ किया जिससे एक लंबे समय तक शासन करने में सफल व जनता व अन्य क्षेत्रीय राजाओं का सहयोग प्राप्त हुआ।

अकबर को राष्ट्रीय सम्राट कहने के पीछे निम्न आधारों को देखा जा सकता

राष्ट्रीय शासक मानने के आधार

- शासन का प्रेम व सहयोग पर आधारित
- एकता शांति की नीति
- राजनैतिक एकता
- धर्म निरपेक्ष राज्य की स्थापना
- अन्य

अकबर का शासन प्रेम व सहयोग पर आधारित ⇒ अपने जनकल्याणकारी कार्यों के माध्यम से प्रजा का दिल जीत लिया था

- अकबर की एकता शांति की नीति ⇒ उसने संपूर्ण साम्राज्य में शांति के स्थापित करने के लिए समाज के सभी वर्गों को एकसूत्र में बांधने का प्रयास किया।

राजनैतिक एकता स्थापित ⇒ संपूर्ण राज्य में एक ही प्रशासनिक व्यवस्था (मनसबदारी)
⇒ योग्यता के आधार पर नियुक्ति

- जजिया, धार्मिक कर व अन्य अनुचित करों की समाप्ति

धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना ⇒ सभी वर्गों के साथ समता का व्यवहार

- हिन्दु के लिए तीर्थ यात्रा कर की समाप्ति

अन्य कारक ⇒ सामाजिक एकता के लिए अन्तर्जातीय विवाह व अन्तर्जातीय खान-पान को प्रोत्साहन

प्रश्न संख्या

(Mains Answer Sheet)

सफलता का प्रवेश द्वार..

- सांस्कृतिक व धार्मिक एकता स्थापित करने के लिए दीन-ए-इलाही धर्म, अनुवाद विभाग की स्थापना।
- हिन्दू धर्म के प्रति आदर व इसके रीति रिवाजों के प्रति आदर भाव रखता था।

उपरोक्त आधार पर देखे तो अकबर राष्ट्रीय शासक कहा जा सकता है जिसमें वह अपने कर्तव्यों का पालन कुशल रूप से जनहित में करता है जो वर्तमान की लोकतांत्रिक प्रणाली में भी देखे जा सकते हैं। अतः अकबर एक महान शासक था जिसने मध्यकाल की सीमाओं में रहते हुए सबके हित में कार्य किया है।

KAUTILYA ACADEMY INDORE

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

Q3 (D) ब्रिटिश कालीन भूराजस्व व्यवस्था का वर्णन कीजिये ?

ब्रिटिश सरकार ने भारत में 200 वर्षों तक शासन किया जिसकी नीतियों का उद्देश्य शोषण करना व अधिक से अधिक लाभ अर्जित करना। सरकार की भूराजस्व नीतियाँ भी इसी उद्देश्य से प्रभावित थी जिससे भारत में बारंबार अकाल, बेरोजगारी, गरीबी जैसी समस्याओं को देखा जाता है।

ब्रिटिश कालीन भूराजस्व नीतियों को इस प्रकार देखा जा सकता है –

भूराजस्व नीतियाँ
- स्थायी बंदोबस्त
- रैय्यतवाड़ी व्यवस्था
- महलवाड़ी व्यवस्था

स्थायी बंदोबस्त => 1793 लार्ड कार्नवालिस द्वारा इसे अपनाया गया

विशेषताएं => भारतीय जमींदारों के साथ स्थायी किया गया

=> बंगाल, बिहार, उड़ीसा में अपनाई गई

KAUTILYA ACADEMY INDORE

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

सफलता का प्रवेश द्वार...

- जमींदारों को भूमि का स्थायी मालिक बना दिया
- राशि - 10/11 कंपनी को व 1/11 भाग स्वयं रखना था
- लगान की राशि समय-सीमा के अंदर जमा नहीं तो जमींदारी नीलामी कर दी जाती थी

लाभ – जमींदारों को लाभ के रूप में भूमि का स्वामित्व व एक बड़ी मात्रा में धनराशि
- सरकार को जमींदार के रूप में ऐसा वर्ग जो ब्रिटिश सरकार के पक्ष में रहे।
- सरकार की आय में वृद्धि
- प्रशासनिक अधिकारियों को लगान व्यवस्था से मुक्ति व उनके व्यय में कमी आई।

हानि – किसानों को जमींदारों के अत्याचार व शोषण का सामना
- कृषि उत्पादकता के विपरीत प्रभाव पड़ा।

रैयतवाड़ी व्यवस्था => 1820 में टामस मुनरो द्वारा अपनाई गई
=> मद्रास, बम्बई व असम क्षेत्र में लागू किया गया।
=> अनुबंध किसानों अर्थात रैयतों के साथ सीधा
=> रैयतों को भूमि का स्वामी माना।
- भू-राजस्व का निर्धारण भूमि के क्षेत्रफल के आधार पर

हानि ⇒ इस व्यवस्था में सरकार द्वारा अधिक लगान की वसूली
- लगान न अदा करने पर भूमि बेदखल कर दिया जाता था।

महलवाड़ी व्यवस्था ⇒ लार्ड हेस्टिंग्स के काल में अपनाई
⇒ भू-राजस्व का बंदोबस्त पूरे के गाँव के प्रधान या महलों पालगीयों के साथ किया गया था
⇒ मध्यप्रदेश, यूपी, पंजाब, 30% भूमि इसके अंतर्गत थी
- लगान का निर्धारण उत्पादन के आधार पर

हानि ⇒ इसने महल के मुखिया को अत्यधिक शक्तिशाली बना दिया।
- सरकार का किसानों से प्रत्यक्ष संबंध समाप्त
- लगान की ऊँची दरें।

इस तरह भू-राजस्व व्यवस्था शोषण वादी नीतियों का एक भाग थी जिसने भारतीय किसानों व अर्थव्यवस्था को बदहाल कर दिया जिससे उन्हें बारंबार अकाल को झेलना पड़ता अकाल के समय पूरे का पूरा गाँव उजड़ जाता था. स्वतंत्रता के पश्चात भूसुधारों को अपनाया व वर्तमान में सरकार द्वारा 2022 तक किसानों की आय दुगना करने का लक्ष्य रखा है।

Q. 1 (A) लैगून झील (Lagoon lake)

Ans. समुद्र तट के निकट लवण या खारी जल की झील या जलाशय जो रोधिका पुलिन द्वारा समुद्र से पृथक्कृत हो रखा है लेकिन समुद्र का पानी उसमें आ जाता है।

उदा. ⇒ चिल्का झील (ओडिशा)
पुलीकट झील (नेल्लोर)

(B) नाफेड (Nafed)

- स्थापना – 2 अक्टूबर 1958
- उद्देश्य – कृषि, उद्यान कृषि एवं वन उत्पाद का विपणन, संसाधन, भंडारण की व्यवस्था करना, उन्नयन तथा कृषि विकास करना है

(C) मल्चिंग (Mulching)

- मृदा संरक्षण की एक विधि है
- इस विधि के अंतर्गत फसलों को काटते समय, उसके जड़ तंत्र खेतों में छोड़ देते हैं या कटे गये फसलों के अवशेष खेतों में बिखेर देते हैं।
- जिससे मृदा के कण संगठित व वाष्पीकरण कम होता है।

भिलाला जनजाति

- यह जनजाति म.प्र. के जोबट, अलीराजपुर में पाई जाती है।
- द्रविड़ प्रजाति की सदस्य है
- यह जाति कबीर पंथी है इस जाति के लोग स्वयं को कबीरहा कहते हैं।

(E) राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

- आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 के तहत राज्य आपदा प्राधिकरण की स्थापना की गई
- 2007 में स्थापित किया।
- अध्यक्ष - मुख्यमंत्री
- कार्य - प्राकृतिक व मानव जनित आपदाओं से निपटना।

(F) कुमहप सागर

संख्या **(Mains Answer Sheet)** सफलता का प्रवेश द्वार...

(G) म.प्र. में कागज आधारित उद्योग

- नेशनल न्यूज प्रिंट एण्ड पेपर मिल (नेपानगर)
- सिक्योरिटी पेपर मिल (होशंगाबाद)
- ओरियंटल पेपर मिल (अमलाई)

(H) शिवालिक श्रेणी

(I) उत्तरी अटलांटिक प्रवाह जल धारा
- यह एक गर्म जल धारा है
- इसका प्रवाह उत्तरी अटलांटिक महासागर में 40° उत्तरी अक्षांश व पश्चिमी देशांतर होता है
- आगे यह धारा नार्वेजियन धारा में मिल जाती है।

(J) प्रमाणित बीज
- ये वे बीज सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम बीज प्रमाणीकरण मानको को पूरा करते है तथा
- राज्य बीज प्रमाणीकरण संस्था द्वारा प्रमाणित होते है
- यह अनुवांशिकी भौतिक रूप से शुद्ध होते है।

(Mains Answer Sheet)

संख्या

(ख) सुनामी के कारण

सुनामी के कारणों में मुख्य कारण –
- भूकंप के कारण (समुद्र में)
- ज्वालामुखी उद्भेदन
- समीर प्रपात
- भूस्खलन
- उल्कापिंड

(ग) वर्षा जल संग्रहण
- जल संरक्षण की एक तकनीक है।
- इसके अंतर्गत वर्षा के जल को नलकूलो, गड्ढो व कुओं में एकत्रित किया जाता है
- भूजल में वृद्धि व सूखे के समय उपयोगी होता है।

(घ) भारत में मातृसत्तात्मक जनजातियाँ
- भारत में केवल एक राज्य में मातृसत्तात्मक जनजातियाँ पाई जाती है।
- मेघालय – गारो
 खासी
 जंयतिया जनजाति मातृसत्तात्मक है।

(अ) वैनगंगा नदी

उद्गम – परसवाड़ा पठार (सिवनी)

अपवाह क्षेत्र – सिवनी, छिंदवाड़ा से बाद महाराष्ट्र में प्रवेश कर जाती है

समाप्त – गोदावरी नदी की सहायक नदी है

(ब) ह्यूमस

- मृदा में सड़े-गले जैवपदार्थ व वनस्पतियों के कार्बनिक ह्यूमस कहलाते है
- यह मृदा के ऊपरी सतह पर पाया जाता है
- मृदा के उपजाऊपन में अहम भूमिका अदा करता है।

KAUTILYA ACADEMY INDORE

२ (b) कुशल सिंचाई प्रणाली की विधियाँ बताइये।

कृत्रिम रूप से फसलों को पानी देना सिंचाई कहलाता है जिसके पारंपरिक तरीकों में कुए, नलकूप, नहरें व तालाब आते हैं।

कुशल सिंचाई प्रणाली की विधियों के अंतर्गत निम्न विधियां आती हैं -

सिंचाई विधियाँ

- रेनगन => इसके अंतर्गत खेत में ऊंची टी तक जल की बौछारें करते हैं।
- ड्रिप सिंचाई => खेत में पाइपलाइन बिछाकर बूंद-बूंद कर पानी पहुंचाया जाता है।
- सतहीजल => नहरों व नालियों द्वारा जल का वितरण।
- स्प्रिंकलर सिंचाई => पाइपलाइन द्वारा फव्वारों द्वारा सिंचाई
- कॉटिंगवन => पौधों के पास बूंद-बूंद कर पानी पहुंचाना

इस तरह इन सिंचाई की विधियाँ अपना कर जल संरक्षण व हर खेत पानी को पहुंचाया जा सकता व किसानों की आय को दुगना किया जा सकेगा।

KAUTILYA ACADEMY INDORE

संख्या (Mains Answer Sheet) सफलता का प्रवेश द्वार..

Q2(C) म.प्र. में स्थित गंगा नदी तंत्र की प्रमुख नदियों का उल्लेख करें?

म.प्र. दक्षिण प्रायद्वीप का सर्वाधिक नदियों वाला प्रदेश है यहाँ 10 बड़ी नदियों का उद्गम होता है। इसलिए इसे नदियों का मायका भी कहा जाता है।

म.प्र. में स्थित गंगा नदी तंत्र की नदियों को हम ऐसा देख सकते है—

गंगा नदी तंत्र
- यमुना नदी तंत्र
- टौंस नदी उपतंत्र
- सोन नदी उपतंत्र

यमुना नदी उपतंत्र ⇒ यमुना की सहायक नदियों में चम्बल नदी जो जानापाव पहाड़ी से उद्गमित होती इसकी सहायक नदियों शिप्रा, पार्वती, बेतवा, बनास, सिंध, काली सिंध आदि आती है।

टौंस नदी उपतंत्र ⇒ यह सतना जिले से (तमसाकुण्ड) उद्गमित होती है सहायक नदियों में बीहड़, बेलन आदि।

सोन नदी तंत्र ⇒ यह अमरकंटक की पहाड़ियों से निकलती इसकी सहायक नदी जोहिला, रिहन्द आदि जिसका संगम गंगा में होता है

इस तरह गंगा नदी की सहायक नदियाँ प्रदेश की तीन सहायक नदियाँ जो उत्तरी म.प्र. में स्थित व वहाँ की जैव विविधता को प्रभावित करती हैं।

KAUTILYA ACADEMY
INDORE

2 (E) मिश्रित खेती क्या है एवं इसके लाभों का उल्लेख करें?

जब फसलों के उत्पादन के साथ-2 पशुपालन भी किया जाता है तो इसे मिश्रित कृषि या मिश्रित खेती कहते हैं।

मिश्रित कृषि के लाभ =

- आय में वृद्धि => कृषि के साथ पशुपालन करने से किसानों को आय अधिक प्राप्त होती
- खाद्य आपूर्ति => पशुओं के अपशिष्ट से खेतों के लिए खाद की आपूर्ति होती रहती जिससे लागत कम होती
- आजीविका => कृषक के परिवार को साल भर कार्य की प्राप्ति होती है
- पौष्टिक आहार => कृषक परिवारों को दूध, छाछ, दही आदि की प्राप्ति से संतुलित आहार प्राप्त होता है।
- कृषि अपशिष्ट का सही उपयोग => पशुओं को खाद्य सामग्री मिलती रहती है
- भूमि, श्रम, पूंजी का सही उपयोग।

इस तरह मिश्रित कृषि करने से छोटे व सीमांत किसानों को अधिक लाभ प्राप्त होता है जिससे उनका जीवन स्तर ऊंचा होता है।

KAUTILYA ACADEMY

प्रश्न संख्या | मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet) | कौटिल्य एकेडमी — सफलता का प्रवेश द्वार...

Q2 (a) स्थायी पवनें क्या हैं इनके प्रकारों का वर्णन करें?

स्थायी पवनें वह पवनें कहलाती हैं जो साल भर निश्चित दिशा में प्रवाहित होती हैं। यह उच्च वायुदाब से निम्न वायुदाब की ओर प्रवाहित होती हैं।

स्थायी पवनों को तीन प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है-

- व्यापारिक पवनें
- पछुआ पवनें
- ध्रुवीय पवनें

व्यापारिक पवनें => उपोष्ण कटिबन्धीय उच्च वायुदाब से विषुवत रेखीय निम्न वायुदाब की ओर चलने वाली पवनें। जिनकी दिशा उत्तर-पूर्व

पछुआ पवनें => उपोष्ण कटिबंधीय उच्च वायुदाब से उपध्रुवीय निम्न वायुदाब की ओर चलने वाली पवनें जिनकी दिशा दक्षिण-पश्चिम होती है।

ध्रुवीय पवनें => यह ध्रुवीय उच्च वायुदाब से उपध्रुवीय निम्न वायुदाब की ओर चलती हैं उत्तर-पूर्व।

उपर्युक्त से स्पष्ट है कि निरंतर ये पवनें अपनी दिशा में प्रवाहित होती व महाद्वीप की जलवायु को प्रभावित करती हैं।

म.प्र. में खाद्य प्रसंस्करण की संभावनाओं पर विचार कीजिये?

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग का तात्पर्य ऐसी गतिविधियों से है जिसमें प्राथमिक कृषि उत्पादों का प्रसंस्करण कर मूल्यवर्द्धन किया जाता है उदा. के लिए दुग्ध, फल, सब्जियों का प्रसंस्करण डिब्बाबंद खाद्य व पेय पदार्थों में बदलना।

म.प्र. में खाद्य प्रसंस्करण की संभावनाओं को इस प्रकार देख सकते है-

- म.प्र. में कृषि जलवायु क्षेत्रों का पाया जाना।
- फसलों में विविधता के साथ खाद्यान्नों में अत्यधिक उत्पादन का होना।
- म.प्र. का दुग्ध उत्पादन में तीसरा स्थान।
- बागवानी फसलों का उत्पादन अधिक अमरूद में प्रथम का उत्पादन, संतरे में द्वितीय स्थान है
- सस्ते श्रम की उपलब्धता।
- परिवहन की उचित व्यवस्था।
- जनसंख्या अधिक होने के कारण मांग का होना। आदि।

उपर्युक्त म.प्र. में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की अपार संभावना है आवश्यकता केवल राजनीतिक इच्छा शक्ति, कुशल मानव श्रम व आधारभूत संरचना ताकि इस उद्योग को विकसित किया जा सके।

KAUTILYA ACADEMY

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका

(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

Q(1) उज्जैन दुर्घटना पर जानकारी प्रदान करें?

उज्जैन में 15 जुलाई 1996 को मानव जनित आपदा की घटना घटित हुई जिसमें कई लोगों की मृत्यु हुई। है।

उज्जैन की दुर्घटना पर इस प्रकार नजर डालते है –

उज्जैन की दुर्घटना

- घटना क्या
- घटना के कारण
- उपाय / सुझाव

घटना क्या => उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर में भीड़ में भगदड़ मचने से जिस से लगभग 40 लोगों की जान गई।

कारण => मंदिर के गर्भगृह में पहुंच का रास्ता सकरा होना।

=> मौनी अमावस्या के लिए लाखों लोगों का एकत्रित होना

=> भीड़ को नियंत्रित रखने के उपायों का अभाव

=> वातानुकूलन की व्यवस्था का पर्याप्त न होना

उपाय सुझाव => भविष्य में ऐसी घटनाओं के घटित न हो इसके लिए प्रशासन को सतर्क रहना चाहिए

- भीड़ नियंत्रण की व्यवस्था।

KAUTILYA ACADEMY INDORE

- लोगों को तत्काल छोड़ जाने की व्यवस्था
- वातानुकूल की व्यवस्था
- गर्भगृह के जाने के मार्गों को भी चौड़ा कराया जाना चाहिए।

इस तरह हम आने वाली आपदाओं को नियंत्रित कर लोगों की जिंदगी को बचा सकते हैं।

KAUTILYA ACADEMY
INDORE

Q. 8 (ख) मृदा क्या है? मृदा संरक्षण के उपाय बताइये?

मृदा भूतल पर पतली परत के रूप में पाई जाती है जिसका निर्माण चट्टानों के अपक्षय से होता है इसमें खनिज कण, पेड़-पौधों एवं जीव-जंतुओं के सड़े गले अंश, जल तथा गैस का मिश्रण होता है।

मृदा एक प्राकृतिक संसाधन है इसके संरक्षण के लिए विभिन्न उपाय किये जा सकते हैं-

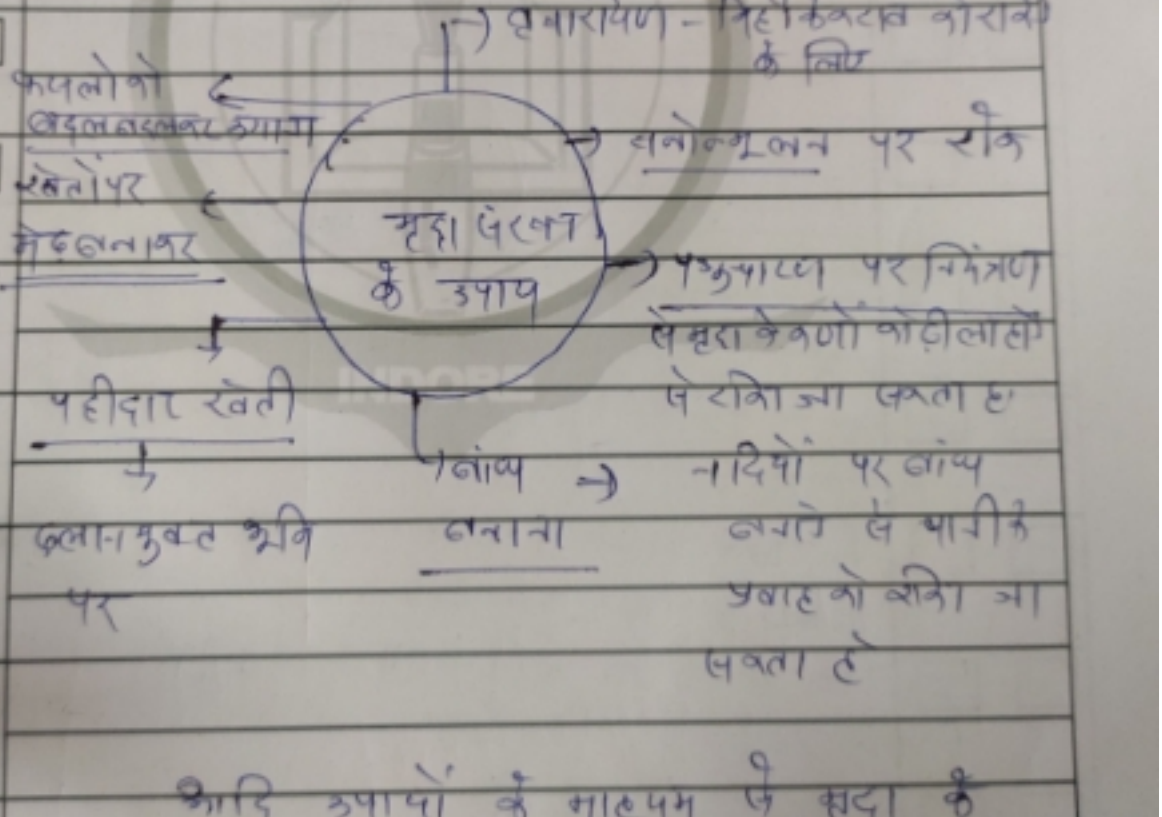

आदि उपायों के माध्यम से मृदा के कटाव को रोका जा सकता है।

Q.3 (A) चट्टान क्या है? इनके प्रकारों का विस्तार से वर्णन कीजिये?

पृथ्वी की क्रस्ट में मिलने वाली सभी मुलायम व कठोर पदार्थ को चट्टान कहते है इनका निर्माण अनेक प्रकार के खनिजों के सम्मिश्रण से होता है जिसमें से आठ प्रमुख तत्व ऑक्सीजन, सिलिकान, एल्यूमीनियम, लोहा आदि ये मुख्यतः चट्टानों के निर्माण में सहायक होते हैं।

निर्माण विधि के अनुसार चट्टानों के तीन प्रकार होते है

प्रकार
- आग्नेय चट्टान
- अवसादी चट्टान
- रूपान्तरित चट्टान

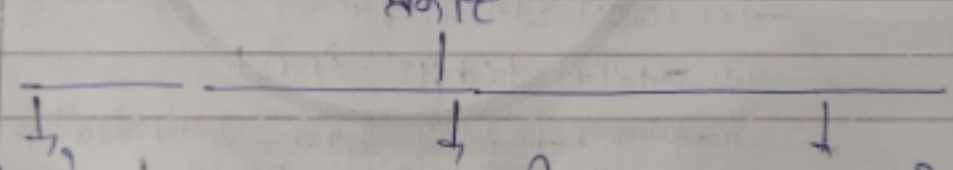

आग्नेय चट्टान → इसका निर्माण क्रस्ट के नीचे उपस्थित तप्त एवं तरल मैग्मा से/होता है। के ठंडा होने से होता है। इन चट्टानों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है -

(a) अभ्यांतरित आग्नेय चट्टान → जब मैग्मा

सतह के नीचे ठंडा होकर ठोस रूप प्राप्त कर लेता तो आंतरिक आग्नेय चट्टान का निर्माण होता है उदा० ग्रेनाइट

(b) बाह्य आग्नेय चट्टान => कभी-2 मैग्मा भूपर्पटी के ऊपर आ जाता है व ठंडा होकर चट्टान का निर्माण करता है उदा. बेसाल्ट चट्टान।

- यह चट्टाने रवेदार होती है व जीवाश्म नहीं पाये जाते हैं।

(2) अवसादी चट्टान => द्रवती तत्व पर आग्नेय व रूपांतरित चट्टानों के अपक्षरण, अपरदन व निक्षेपण से अवसादी चट्टानों का निर्माण होता है।

- यह चट्टाने परतदार होती।
- जैविक अवशेषों से युक्त चट्टाने होती है
उदा. - शैल, चूनापत्थर आदि।

(3) रूपांतरित आग्नेय चट्टान => ताप एवं दबाव के कारण आग्नेय व अवसादी चट्टानों के संगठन व स्वरूप में परिवर्तन हो जाता है उसे रूपांतरित चट्टान कहा जाता है।

- जीवाश्म नहीं मिलते।

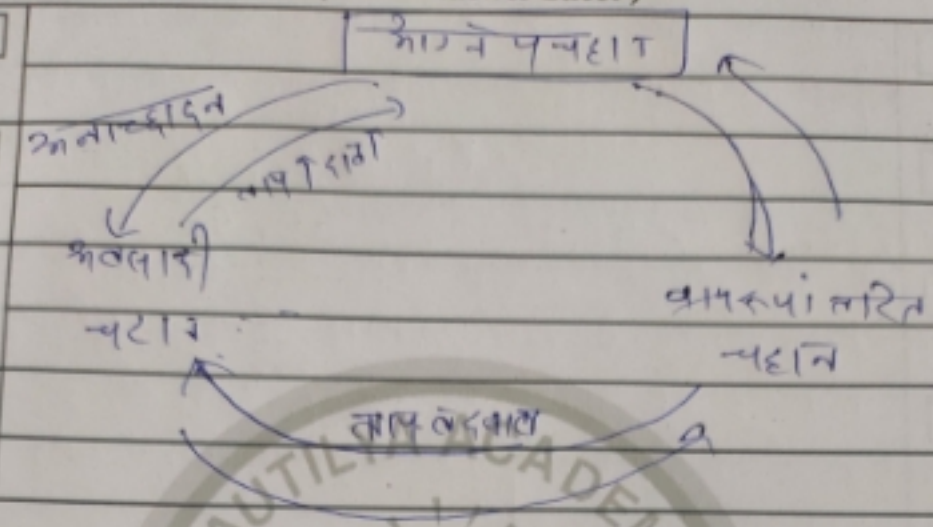

संख्या **(Mains Answer Sheet)**

शैलचक्र

इस तरह चट्टानों का निर्माण होता है जो एक चट्टान के रूप में परिवर्तित होती रहती है इन चट्टानों से ही जीवाश्म ईंधनों की प्राप्ति व आवश्यक खनिज पदार्थ आदि का निर्माण होता है इसलिए चट्टानों का महत्व हमारे जीवन में आवश्यक है।

KAUTILYA ACADEMY INDORE

(Mains Answer Sheet)

संख्या

Q.3 (D) जल संरक्षण आज के युग की आवश्यकता है समझाइये साथ ही जल संरक्षण हेतु सुझाव दीजिये?

जल एक प्राकृतिक संसाधन है जो मानव जीवन के लिए अति आवश्यक यह पृथ्वी पर वर्षा, झीलें, नदियों, सागरों आदि के रूप में उपलब्ध है किंतु मानव उपयोग हेतु 3% जल ही उपलब्ध है इस जल के अतिदोहन से आज पृथ्वी पर जल की विकराल समस्या उत्पन्न हो गई है व जल संरक्षण पर जोर देने की बात की जा रही है।

जल संरक्षण आज के युग की आवश्यकता है इसे निम्न तथ्यों से देख सकते है -

- नदियों में पानी की मात्रा का कम, गर्मियों में नदियों का सूख जाना
- भूजल स्तर के अतिदोहन से भूजल में निरंतर होती कमी।
- गर्मी के दिनो में कई नगरो में पेयजल की समस्या व वंचित लोगो को शुद्ध पेय जल उपलब्ध न होना
- प्राकृतिक आपदाओं (जैसे सूखा, वर्षा में कमी, तापमान में वृद्धि आदि का निरंतरता में होना)
- बढ़ती जनसंख्या। आदि)

इसी कारण जल संरक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया जा रहा है ताकि आती

प्रश्न संख्या मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet) कौटिल्य एकेडमी सफलता का प्रतीक द्वारा...

पीढी को लिए प्राकृतिक संसाधन का संरक्षण किया जा सके।

जल संरक्षण हेतु निम्न उपाय है -

जल संरक्षण उपाय

- रेनवाटर हार्वेस्टिंग
- रिसाइकलिंग
- कुशल सिंचाई प्रणाली
- खेती के नवीन तरीके
- वाणिज्यिक उपयोग
- अन्य

रेनवाटर हार्वेस्टिंग => इसके अंतर्गत वर्षा के जल को भूमि के अंदर पहुंचाया जाता है।

रिसाइकलिंग => उपयोग किये जल को शुद्ध कर पुनः उपयोग करना।

कुशल सिंचाई प्रणाली => ड्रिप, स्प्रिंकलर सिंचाई जैसी विधियाँ अपनाना ताकि कम पानी के उपयोग मे अधिक उत्पादन किया जा सके।

खेती के नवीन तरीके => कम पानी उपयोग वाली कृषि फसलों का उत्पादन

- जैविक कृषि को बढ़ावा देना।

वाणिज्यिक उपयोग ⇒ जल रहित शौचालय।
⇒ दबावयुक्त वाटरब्रूम्स का उपयोग करना।

अन्य सुझाव ⇒ वाटरपिच तकनीक का उपयोग

यह स्वच्छ जल की मात्रा बढ़ाने एवं पुनः प्रयोग, पुनःप्रयुक्त जल के माध्यम से अपशिष्ट जल में कमी लाने पर केंद्रित है।

⇒ लोगों मे जल संरक्षण के प्रति जागरूकता लाना आदि।

उपर्युक्त का प्रयोग कर जल संरक्षण किया जा सकता है जिससे सभी के लिये जल की आपूर्ति वर्ष भर सुनिश्चित की जा सकती है सरकार द्वारा जल संरक्षण के संदर्भ में विभिन्न उपाय, जल शक्ति मंत्रालय, जल संरक्षण अधिनियम.1974 बनाया गया था, जागरूकता अभियान आदि के द्वारा जल संरक्षण का प्रयास किया जा रहा है।

संख्या

Q3 (b) भारत में शक्ति संसाधनों की जानकारी दीजिए?

विश्व के सभी देशों को ऊर्जा संसाधन की अति आवश्यकता है, भारत भी अपनी ऊर्जा संबंधी जरूरतों को स्वयं उत्पादन कर या आयात के माध्यम से पूरा करता है। भारत इस क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने के लिए परंपरागत व गैर-परंपरागत संसाधनों से ऊर्जा का उत्पादन करता व विशाल देश के लिए ऊर्जा की आपूर्ति सुनिश्चित करता है।

भारत में शक्ति संसाधनों को दो भागों में विभाजित किया गया है-

शक्ति संसाधन

परंपरागत संसाधन
- ताप विद्युत गृह
- नाभिकीय परमाणु संयंत्र

गैर परंपरागत
- हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर स्टेशन
- बायोमास
- सौर ऊर्जा
- पवन ऊर्जा
- अन्य

KAUTILYA ACADEMY INDORE

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

तापी विद्युत गृह ⇒ इसमे कोयला प्राकृतिक गैस, पेट्रोलियम का प्रयोग किया जाता है

- प्रमुख तापविद्युत गृह - विंध्याचल ताप विद्युत केंद्र (4760 MW)
- सतपुड़ा —॥—
- तलचर तापविद्युत केंद्र (उड़ीसा) आदि

यह क्षेत्र 44.3% ऊर्जा का उत्पादन करता है

नाभिकीय परमाणु संयंत्र ⇒ तारापुर (MH)
रावतभाटा (राजस्थान)
नरोरा (UP)

सारे संयंत्र 1.1% ऊर्जा की आपूर्ति को सुनिश्चित करते है

गैर परंपरागत ⇒

हाइड्रोइलेक्ट्रिक ⇒ यह नवीनीकृत ऊर्जा, पर्यावरण मित्र स्त्रोत है
⇒ पानी को ऊपर से गिराकर टरबाइन चलाई जाती है
उदा. → शिवसमुद्रम (कर्नाटक)
→ कोयना (महाराष्ट्र)

यह 11.4% ऊर्जा का उत्पादन करता है

बायोमास ⇒ ग्रामीण अपशिष्ट से विद्युत का उत्पादन किया जाता है

- दिल्ली के निकट कुंड
- कुम्बई
- पोर्ट ब्लेयर में गैंजीफायर आदि

91.2 % ऊर्जा का उत्पादन करने में उपयोगी।

सौर ऊर्जा :) कर्क रेखा व उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में स्थित होने के कारण सौर ऊर्जा की अपार संभावना है भारत में कई सौर ऊर्जा संयंत्र लगे हुए जैसे रीवा सोलर पावर प्लांट (750 MW) आदि।

पवन ऊर्जा मांडवी (गुजरात) व जामगोदरानी (देवास) आदि।

इस तरह भारत में परंपरागत व गैर-परंपरागत संसाधनों से ऊर्जा की प्राप्ति करता है भारत को वर्तमान व भविष्य की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करना है तो हमें नवीनीकृत शक्ति संसाधनों की दिशा में आगे बढ़ना होगा ताकि परंपरागत संसाधनों पर दबाव कम पड़ेगा व पर्यावरण प्रदूषण रहित ऊर्जा की प्राप्ति होगी।